डॉ. कन्हैया त्रिपाठी

सुरक्षित जल भविष्य की पहल है प्रधान मंत्री की 'मन की बात'

'मन की बात' भारत के माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की विशेष रेडियो चर्चा से भारत में जल की चर्चा भी शुरू हुई है। भारत में 'मन की बात' ने जल संरक्षण के लिए मानव संसाधन तैयार किए हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में रुचि लेकर जल संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं।

दुनिया भर में जल संरक्षण की बातें हो रही हैं। अभी कुछ समय पहले ही तो संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष ने जल सम्मेलन में शानदार आह्वान करते हुए जल की सुरक्षा, रखरखाव और निवेश का आग्रह किया। तीन दिन के इस महासम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा हमने जल चक्र को तोड़ दिया है, पारिस्थितिक तंत्र को नष्ट कर दिया है और भूजल को दूषित कर दिया है। चार में से लगभग तीन प्राकृतिक आपदाएं पानी से जुड़ी होती हैं। चार में से एक व्यक्ति सुरक्षित रूप से प्रबंधित जल सेवाओं या स्वच्छ पेयजल के बिना रहता है। और 1.7 अरब से अधिक लोगों में बुनियादी स्वच्छता की कमी है। आधा अरब खुले में शौच करते हैं। और लाखों महिलाएं और लड़कियां हर दिन घंटों पानी लाने में लगाती हैं।

हमारे देश में जल संरक्षण की बातें हो रही हैं। लेकिन जो बातें हो रही हैं वह क्या जमीनी स्तर पर भी हो रही हैं, ऐसा हमें मन की बात से पता चलता है।

'मन की बात' भारत के माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की विशेष रेडियो चर्चा से भारत में जल की चर्चा भी शुरू हुई है। भारत में 'मन की बात' ने जल संरक्षण के लिए मानव संसाधन तैयार किए हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में रुचि लेकर जल संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं। माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बार बहुत ही भावुक मन से कहा था कि मेरा बचपन ऐसी जगह से प्रारम्भ हुआ है जहां हमें पानी के लिए जूझना पड़ता था। उस क्षेत्र में जल की सुविधा ठीक न थी। उन्हें अपने बचपन के दिन भूले नहीं इसलिए उन्होंने जल के रखरखाव, उसके बचाने की मुहिम को रेडियो पर 'मन की बात' में शामिल किया। यह एक अच्छी पहल है। जल के बारे में अब 'मन की बात' कार्यक्रम में भारत के लोग अपनी बात साझा करते हैं। माननीय प्रधान मंत्री खुद इसकी पहल करते हैं और आमजन भी अपने क्षेत्र में जल के लिए जो कुछ कर रहे हैं, उसे माननीय प्रधान मंत्री को बताते हैं।

हिंदुस्तान की अपनी भौगोलिक और जलवायु की विविधता है लेकिन पानी तो सबकी आवश्यकता है। इसके बगैर तो हम जी ही नहीं सकते। हम क्या, पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ और जितने भी तरह के जीव इस जगत में हैं, वे जल के अभाव में कैसे रह सकते हैं भला? हमारा भारत प्राचीन काल से जल संरक्षण के लिए कार्य करता रहा है। इसके प्रमाण हमारे धर्म-ग्रन्थों में मिलते हैं। जल औषधि है और इसका होना हमारे जीवन के लिए अमृत है। 'मन की बात में' इसी अमृत की शुद्धता बनाए रखने की पहल माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी करते हैं। ऐसा जल-एजेंडा और जल-निवेश का देसज स्वभाव विकसित करने की पहल किसी अन्य देश में नहीं देखने को मिलती है जबकि दुनियाभर में ''रनिंग दि वर्ल्ड ब्ल्यू'' जैसे मुद्दे बहुत चर्चा में हैं। सरकारें निवेश करना नहीं चाहती हैं और अपने नागरिकों से ऐसे स्वभाव का विश्वास भी हासिल नहीं करना चाहती जिससे नागरिक खुद जल-बचाव के लिए सेवाभावी होकर इस हेतु अपना कर्तव्य निर्वाह के लिए आगे आऐं। 'मन की बात' में माननीय प्रधान मंत्री ने यह कर दिखाया है। वह जानते हैं कि भारतीय आमजन को हमें किस चीज के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। 'मन की बात में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिन

मन की बात कार्यक्रम में माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा जल चर्चा।

अमृत सरोवर अभियान हमारी आज की अनेक समस्याओं का समाधान तो करता ही है, हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उतना ही आवश्यक है। इस अभियान के तहत, कई जगहों पर, पुराने जलाशयों का भी कायाकल्प किया जा रहा है। अमृत सरोवर का उपयोग, पशुओं की प्यास बुझाने के साथ ही, खेती-किसानी के लिए भी हो रहा है। इन तालाबों की वजह से आस-पास के क्षेत्रों का भूजल स्तर बढ़ा है। वहीं इनके चारों ओर हरियाली भी बढ़ रही है।

जल-रक्षकों से बात की वे अपनी ऊर्जा के कई गुना अधिक ऊर्जा से जल-संरक्षण के लिए आगे आए हैं। 'मन की बात' के मार्च 2016 में प्रसारित रेडियो कार्यक्रम में उन्होंने किसान सुविधा एप पर चर्चा की थी। वें मन की बात में बहुत ही आत्मीय ढंग से सवाल करते हैं कि हम देशवासियों को भी सोचना होगा कि पानी के बिना क्या होगा? हमारे यहाँ पानी वह बहकर तालाबों में आने के जो मार्ग होते हैं जहाँ पर कूड़ा-कचरा या कुछ न कुछ एनक्रोचमेंट हो जाता है पानी आना बंद हो जाता है जिसके और उसके कारण जल-संग्रहण धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। क्या हम उन पुरानी जगहों को फिर से एक बार खुदाई करके, सफाई करके अधिक जल-संचय के लिए तैयार कर सकते हैं? जितना पानी बचायेंगे उतना ही फायदा होगा, यदि हमने पहली बारिश में भी कुछ पानी बचा लिया, तालाब भर गए, हमारे नदी-नाले भर गए तो कभी पीछे बारिश रूठ भी जाए तो हमारा नुकसान कम होता है।

वह सरकार की अपनी प्रतिबद्धता बताते हैं और आह्वान भी करते हैं। इस बार आपने देखा होगा 5 लाख तालाब, बनाने का बीड़ा उठाया है। मनरेगा से भी जल-संचय के लिए परिसंपत्ति निर्मित करने की तरफ बल दिया है। गाँव-गाँव पानी बचाओ, आने वाली बारिश में बूँद-बूँद पानी कैसे बचाएँ। गाँव का पानी गाँव में रहे, ये अभियान कैसे चलायें, आप योजना बनाइए, सरकार की योजनाओं से जुड़िए ताकि एक ऐसा जन-आंदोलन खड़ा करें, जिससे पानी का महत्व भी समझें और पानी संचय के लिए हर कोई जुड़े। यह किसी भी देश के प्रधान मंत्री की ओर से की गई बेहतरीन पहल मैं मानता हूँ। जनवरी 2016 में एक महत्वपूर्ण बात जल के बारे में माननीय प्रधान मंत्री ने 'मन की बात' में कही थी कि भारत जैसे देश के लिए ये बहुत महत्वपूर्ण है और भारत का सामुद्रिक इतिहास स्वर्णिम रहा है। संस्कृत में समुद्र को उदधि या सागर कहा जाता है। इसका अर्थ है अनंत प्रचुरता। सीमायें हमें अलग करती होंगी, ज़मीन हमें अलग करती होगी, लेकिन जल हमें जोड़ता है, समुद्र हमें जोड़ता है। समुद्र से हम अपने-आप को जोड़ सकते हैं, किसी से भी जोड़ सकते हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी की मन की बात को भारतीय समझ लें तो भारत में पानी से नाता स्थापित करने से उन्हें कोई रोक नहीं सकता। यह एक तरह से भावना जगाने की कोशिश है। यह जल से जोड़ने की कोशिश है। अगस्त 2022 के 'मन की बात' का स्मरण करें जिसमें माननीय प्रधान मंत्री जी ने जल संरक्षण कर रहे जलसेवियों की चर्चा की जो कोई एक दो नहीं अपितु सामूहिक रूप से सक्रिय हैं, यह सबसे अच्छी बात है।

माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की जल पर विशेष चर्चा

माननीय प्रधान मंत्री बहुत सुकून से चर्चा करते हैं कि-मुझे तेलंगाना के वारंगल के एक शानदार प्रयास की जानकारी मिली है। यहाँ एक नई ग्राम पंचायत का गठन हुआ है जिसका नाम है 'मंग्त्या-वाल्या थांडा'। यह गाँव फॉरेस्ट एरिया के करीब है। यहाँ गाँव के पास ही एक ऐसा स्थान था जहाँ मानसून के दौरान काफी पानी इकठ्ठा हो जाता था। गाँव वालों की पहल पर अब इस स्थान को अमृत सरोवर अभियान के तहत विकसित किया जा रहा है। इस बार मानसून के दौरान हुई बारिश में ये सरोवर पानी से लबालब भर गया है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि मैं मध्य प्रदेश के मंडला में मोचा ग्राम पंचायत में बने अमृत सरोवर के बारे में भी आपको बताना चाहता हूँ। ये अमृत सरोवर कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के पास बना है और इसने इस इलाके की सुन्दरता को और बढ़ा दिया है। वह ललितपुर की चर्चा कुछ इस प्रकार करते हैं उत्तर प्रदेश के ललितपुर में, नवनिर्मित शहीद भगत सिंह अमृत सरोवर भी लोगों को काफी आकर्षित कर रहा है। यहाँ की निवारी ग्राम पंचायत में बना ये सरोवर 4 एकड़ में फैला हुआ है। सरोवर के किनारे किया गया वृक्षारोपण इसकी शोभा को बढ़ा रहा है। सरोवर के पास लगे 35 फीट ऊँचे तिरंगे को देखने के लिए भी दूर-दूर से लोग आ रहे हैं। वे "मन की बात" में दक्षिण भारत में कर्नाटक में स्थित सरोवर की बात करते हुये उल्लेख करते हैं कि अमृत सरोवर का ये अभियान कर्नाटक में भी जोरों पर चल रहा है। यहाँ के बागलकोट जिले के बिल्केरूर गाँव में लोगों ने बहुत सुंदर अमृत सरोवर बनाया है। दरअसल इस क्षेत्र में, पहाड़ से निकले पानी की वजह से लोगों को बहुत मुश्किल होती थी, किसानों और उनकी फसलों को भी नुकसान पहुँचता था। अमृत सरोवर

अमृत सरोवर का निर्माण।

बनाने के लिए गाँव के लोग, सारा पानी चैनेजलाइज करके एक तरफ ले आए। इससे इलाके में बाढ़ की समस्या भी दूर हो गई। अमृत सरोवर अभियान हमारी आज की अनेक समस्याओं का समाधान तो करता ही है, हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उतना ही आवश्यक है। इस अभियान के तहत, कई जगहों पर, पुराने जलाशयों का भी कायाकल्प किया जा रहा है। अमृत सरोवर का उपयोग, पशुओं की प्यास बुझाने के साथ ही, खेती-किसानी के लिए भी हो रहा है। इन तालाबों की वजह से आस-पास के क्षेत्रों का भूजल स्तर बढ़ा है। वहीं इनके चारों ओर हरियाली भी बढ़ रही है। इतना ही नहीं, कई जगह लोग अमृत सरोवर में मछली पालन की तैयारियों में भी जुटे हैं। मेरा, आप सभी से और खासकर मेरे युवा साथियों से आग्रह है कि आप अमृत सरोवर अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें और जल संचय और जल-संरक्षण के इन प्रयासों को पूरी ताकत देकर उसको आगे बढ़ाएं।

आह्वान करने से बदलाव की प्रत्याशा बढ़ी

जल संरक्षण की अमृत सरोवर योजना बहुत ही सुंदर पहल है। इसे भारत के प्रत्येक ग्राम में प्रसारित की जानी चाहिए। माननीय प्रधान मंत्री यह जानते हैं कि हमारी पहल से भारत के गाँव के लोग ज़रूर इस दिशा में कदम उठाएंगे। वे सोचेंगे, वो करेंगे, अच्छा करेंगे। उन्होंने यह भी देखा है कि कैसे मध्य प्रदेश, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश के किसान, मजदूर और ग्रामवासी एक सामूहिक निर्णय, पहल और उत्तरदायित्व

जल कुंओं का पुनरूद्धार।

का निर्वहन कर रहे हैं।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि गांवों में माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की बात का असर तो हुआ है। इस आह्वान से बदलाव की प्रत्याशा है और इससे भारत की आर्थिक समृद्धि में भी बदलाव की प्रत्याशा है। इस बात की प्रशंसा की जानी चाहिए कि जल के लिए किसी राष्ट्र का नेतृत्वकर्ता खुद आगे आकर अपने 'मन की बात' में सबके मन का आदर कर रहा है और वह भी राष्ट्रोत्थान के लिए। यह जल बचेगा तो प्रधान मंत्री से ज्यादा आमजन लाभान्वित होने वाला है इसलिए इसके पीछे के मानवीय उद्देश्य निश्चय ही प्रशंसनीय हैं।

एक बात ज़रूर यहाँ कहनी पड़ रही है कि भारत के बहुत से गांवों में जो महत्वपूर्ण दायित्व को पूर्ण करने के लिए चुने हुये प्रतिनिधि हैं, वे अपने देश की तरक्की के बारे में सोचें। यदि केंद्र सरकार या राज्य सरकार सरोवर, कुंआ या पोखर के लिए बजट दे रही है तो उसका ठीक प्रकार से कार्यान्वयन करें। इस प्रयोजन हेतु आवंटित धन से कोई चोरी न करें। कोई भ्रष्टाचार न करें क्योंकि जल संरक्षण देखा जाए तो पुण्य कार्य है। आपके परिवार के लोग लाभान्वित होते हैं। पशु लाभान्वित होते हैं पर यह सोचिए कि यदि ऐसे सरोवर, कुंए और पोखरें ठीक से बनाए जाएँ तो पक्षी भी आकर उससे पानी पीते हैं। उनके भीतर के आनंद को देखें। इसलिए इस हेतु जो भी धन गांवों में खर्च के लिए भेजा जा रहा है, उसके प्रति ईमानदारी ज़रूरी है।

माननीय प्रधान मंत्री जी पहल कर रहे हैं। निवेश के लिए योजनाएँ बनाकर इस हेतु धन उपलब्ध करा सकते हैं किन्तु इसको खर्च तो गाँव के प्रधान और ग्राम सचिव को करना है। पुण्य से चोरी करने की कोई कोशिश यदि इस स्तर पर होगी तो ये बातें ठीक नहीं होंगी।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने मन की बात में जिन जल-संरक्षण करने वालों का ज़िक्र किया है, वे निःसन्देह बदलाव की संस्कृति के राजदूत हैं, लेकिन यदि हर गाँव, हर गाँव के समस्तजन इस दिशा में काम करना शुरू कर दें तो पानी की चिंता कम से कम भारत में उन क्षेत्रों में नहीं होगी जो बहुत ज्यादा आपदा क्षेत्र के रूप में चिन्हित नहीं किए गए हैं।

'मन की बात' से जल का भविष्य हुआ सुरक्षित

बदलाव की विभिन्न कहानियों को सुनकर एहसास तो अच्छा होता है। यह सोचने और समझने की प्रवृत्ति आमजन में यूं भी होती है कि आखिर यह तो हमारे ही घर के लिए, खेती के लिए, उद्योग के लिए ज़रूरी बात बताई जा रही है। हमारे ही पशु पानी पीकर हमें दूध देते हैं और अपनी शक्ति का संवर्धन करते हैं। हमारे आस-पास के पक्षी कलरव करते हैं।

'मन की बात' में माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कच्छ के रण की एक जनजाति ''मालधारी'' जल संरक्षण के लिए ''वृदास'' नामक पद्धति का उल्लेख किया है, जो छोटे कुएं बनाकर पानी का संरक्षण करते हैं और इसके साथ ही पेड़-पौधे लगाते हैं। जनजाति समुदाय के लोग इसी प्रकार ऐतिहासिक परम्परा ''हलमा'' को जल संरक्षण के लिए इस्तेमाल करते हैं। माननीय प्रधान मंत्री ने भील जनजाति समुदाय के लोगों की भी चर्चा की वे कहते हैं कि भील जनजाति के लोग पानी बचाते हैं और अपने भू-जल स्तर को ठीक करते हैं। यह काम भारत के लोग सीख लें और सभी गाँव यह तय करें कि हम पानी बचाएंगे तो हमें जल के लिए ज्यादा चिंता करने की आवश्यकता नहीं होगी।

भारत का भविष्य अपने हाथों में है। 'मन की बात' ने जो जन-संदेश दिया है वह अच्छी सोच है लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक भारतीय जागरूक हो तथा लोगों में जागरूकता फैलाएं, क्योंकि इससे सबका भविष्य आनंद की ओर बढ़ेगा। यदि इस आनंद के लिए भारतीय कर्मशील बनें तो, संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष या महासचिव की चिंताएँ कम से कम भारत के लिए शून्य हो सकेंगी और इसमें कोई दो मत नहीं कि दुनिया के लिए भारत उत्प्रेरक और प्रेरणा का स्रोत बनकर उभरेगा।

सपंर्क करें:
डॉ. कन्हैया त्रिपाठी,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर-470 003 (म.प्र.)
मो. 9818759757
ईमेलः **hindswaraj2009@gmail.com**